उत्तर प्रदेश एवं बिहार में बच्चों में निमोनिया के प्रबन्धन हेतु घरेलू निर्णय क्षमता को विकसित करना

izkstsDV dk dk;Zdkj.kh lkjka'k

dk;ldkj.kh lkjk'k

i"BHkfe%& वर्ष 2005 में 2.3 मिलियन शिशुओं की मृत्यु निमोनिया और डायरिया के कारण हुई जिनकी आयु 1 माह से 5 वर्ष के बीच में थी। अधिकतर परिवार बीमारी को देर से पहचानते है, समय पर स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध ना कर पाने के कारण घरेलू इलाज करने से, अप्रशिक्षित और झोलाछाप डाक्टरों से इलाज करवाने के कारण होती है। संतुलित आहार की कमी, वायु प्रदूषण जो गाक्र में चूल्हे के प्रयोग से होने वाले धुंऐ जिनमें हानिकारक गैसे होती हैं, के वायुमंडल में मिल जाने के कारण होती है। प्रतिरोधक क्षमता के कम होने के कारण होती हैं।

ifjdYiuk%& समुदाय को शिशुओं में बचपन से ही लोगों को निमोनिया के प्रति जागरूक करना चाहिये। निमोनिया को पहचानना तथा देरी किये जाने पर होने वालें परिणामों के बारे में बताना, सही विप्रलेषणों की जानकारी प्रदान करना, देरी से होने वाले संभावित परिणामों को बताना।

y{;%&उत्तरी भारत में यदि कोई शिशु थोड़ा सा भी सास्त्र संबंधी बीमारी से ग्रसित हो तो उसे जागरूक करने के लिए एक दूसरे को आवप्र्यक सामग्री उपलब्ध कराना।

LFkku%& उत्तर प्रदेप्र और बिहार में कई भाषाओं का प्रयोग करने वाले लोग निवास करते हैं, इसलिए इस कार्य को करने के लिए पिछड़े हुए गाक्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों जो उत्तर प्रदेप्र और बिहार के 14 जिले र्लिगभग 12.4 प्रतिशत ज़िलों के बराबरक्र है उनमें किया गया।

fof/k;k%&

opkfjdrk%& शिशुओं में सास्त्र संबंधी बीमारी के बारे में विस्तृत जानकारी के लधु चित्र तैयार किये गये । इनका प्रयोग प्रोधकार्यों जैसे गहन साक्षात्कार र्िn=42क्र अर्धसंगठनात्मक साक्षात्कार (n=72) एवं केन्द्रीय समूह परिचर्चा (n=42) जो 7 जिलों में की गयी जिससे, इसमें बाल निमोनिया में प्रयोग किये गये शब्दों का शब्दकोश बन सके। अपने प्रत्यक्ष ज्ञान के द्वारा सुविधा प्रदाता और स्वास्थ्य प्रदाताओं ने विभिन्न कारकों के द्वारा निमोनिया का पता लगाया तथा बहुत से केस परिदृप्र्यों के द्वारा इसका हल प्राप्त किया तथा बहुत सी जानकारियाक्रदवाइयाक्रजो इसके इलाज के लिए प्रयुक्त होती हैं को एकत्र किया। केस अध्ययन(n=12) करके शिशुओं में निमोनिया से होने वाले दुष्प्रभावों को पता किया गया। प्राप्त आंक्रड़ों का अंग्रेजी में अनुवाद किया गया। प्रतिलिपि को दो सांकेतिक अंकों को देने वालों के द्वारा संकेतिक अंक प्रदान किया गया । भागीदारों द्वारा विषय का विप्रलेषण जिलों में किया गया जिससे संदेशों को विकसित करने में मदद मिली ।

lns'k fodkl%& संदेशों को हमारे अनुभवी वाणिज्यिक सहयोगियों के साथ मिल कर किया गया जो स्वास्थ्य संचार में विशेषज्ञ थे। रचनात्मक शोध के परिणाम का प्रयोग पोस्टर, आडियो और वीडियो संदेशों को तैयार करने में किया गया और 4 कार्य क्षेत्रों में वर्गीकृत किया जो निम्न हैं–

िaक्रलक्षणों को पहचानना

िbक्रकब और कहास्त्रउपचार दिया जायें।

िcक्रकिस प्रकार माता –पिता अच्छी देखभाल की व्यवस्था करें।

िdक्रबीमारी की गंभीरता को पहचानना । ये तीन संदेश प्रत्येक लिखित, आडियो और वीडियों के रूप में दिये जायेगें।

पुष्टिकरण से पहले संदेशों को लखन{ के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में किया गया।

lans'k ifj"Vdj.k % इसको 7 जिलों मे दूसरे समूहों द्वारा 49 केन्द्रीय समूह परिचर्चा के द्वारा किया गया।

vko';drkuq:i lans'kksa dk fuekZ.k% उत्तर प्रदेश और बिहार के 7 जिलों से प्राप्त किये गये संदेशों को भागीदारों एवं लाभार्थियों की आवप्र्यककता अनुसार एवं बाल निमोनिया व्यवहार परिर्वतन संचार समिति (CPBCCCG) की सलाह से बनाया गया । इसके पप्र्यात प्राप्त आखिरी पोस्टर, आडियो और वीडियो संदेशों को समुदाय में जागरूकता फैलाने के लिए उपयोग में लाया जाएगा।

vk'k;%& बचपन में हुयी निमोनिया के द्वारा व्यवहार में परिवर्तन को माता–पिता के द्वारा समुदाय में परिवर्तन के लिए प्रयोग किया जायेगा जो सरकारी या गैर सरकारी क्षेत्र से हो सकते हैं। समाज को पूरा करने वाले संयोजक, विशेषज्ञ और दूसरे समुदायों के चौकीदार जैसे राजनीतिज्ञ और विकास के प्रयोग में लायेगी। जैसे की संदेशों को माता–पिता की जागरूकता के लिए प्रयोग में लाया जायेगा। जिसके लिए उत्तर प्रदेश और बिहार की राज्य सरकारों द्वारा बड़े स्तर पर लागू करने के लिए संयोजक जैसे बी.बी.सी. मीडिया CHAI और राजीव गान्धी महिला परियोजना की अनुमति संदेशों के व्यवहार में परिवर्तन के लिए रणनीति की आवश्यकता है। ये बच्चों में होने वाली प्राथमिक निमोनिया को पहचानने और शिशिओं के जीवन के विकास में लाभदायक होगी।